पाठ - 'पद'

- मीरा

प्रत्येक - 1 व 2 अंक

① मीरा ने 'हरि' किसे कहा है? वे अपनी किस पीड़ा को दूर करना चाहती थीं?

उ० - मीरा ने 'हरि' श्री कृष्ण को कहा है। उनके मन में ईश्वर की भक्ति में पूरी तरह लीन होने की पीड़ा है। वे श्री कृष्ण को ही अपना सर्वस्व मानती हैं। उनके मन में उनसे मिलने की चाह है। इसी विरह पीड़ा को वे दूर करने की इच्छुक हैं।

② श्रीकृष्ण ने अपने भक्तों की रक्षा किस प्रकार की थी? उदाहरण सहित लिखो।

उ० - भक्तों ने जब-जब श्री कृष्ण को सहायता के लिए पुकारा, वे सहायता करने के लिए आए। जब भरी सभा में दुःशासन ने द्रौपदी का चीर हरण करना चाहा तब कृष्ण को पुकारने पर उन्होंने चीर बढ़ाकर उनकी सहायता की। भक्त प्रह्लाद को उसके पिता हिरण्यकश्यप के अत्याचारों से बचाने के लिए भगवान ने नरसिंह का रूप धारण करके आ गए। नदी में डूबते हाथी ने भगवान का नाम लिया तो उसे मगरमच्छ के मुँह से बचाया। इस प्रकार श्रीकृष्ण सदा भक्तों की रक्षा करते हैं।

③ मीरा के पद किस भाषा में रचे गए हैं?

उ० मीरा के पद ब्रज मिश्रित राजस्थानी में रचे गए हैं।

④ मीरा श्रीकृष्ण की चाकर बन कर क्या प्राप्त करना चाहती हैं?

उ० - मीरा श्री कृष्ण की दासी बनकर दर्शन, नाम स्मरण, व भाव-भक्ति तीनो उपलब्धि

पाना चाहती हैं। वे सोचती हैं कि श्री कृष्ण की दासी के रूप में उन्हें हमेशा दर्शन का लाभ प्राप्त होगा। उनकी सेवा करने से नामस्मरण रूपी जेब खर्च प्राप्त होगा। भाव-भक्ति रूपी जागिर प्राप्त हो जाएगी।

(5) भाव-भक्ति को जागिर क्यों कहा गया है?

उ० - किसी भी जागिर को प्राप्त करना अत्यंत कठिन कार्य है। एक भक्त के लिए उसकी सबसे बड़ी जागिर है उसका आराध्य। मीरा श्रीकृष्ण को सब कुछ मानती हैं। वे सोचती हैं कि दासी बनकर वे श्रीकृष्ण के दर्शन और नाम स्मरण करके भाव-भक्ति तो प्राप्त कर ही लेंगी। भावपूर्ण भक्ति ही उनके लिए महत्वपूर्ण है। इसलिए उन्होंने भाव-भक्ति को जागिर कहा है।

(6) श्री कृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उ० - श्रीकृष्ण सिर पर मोरपंख युक्त मुकुट सुशोभित है। शरीर पर पीले वस्त्र, ऊपर से गले में वैजयंती माला शोभायमान हो रही है। मुरली बजाते हुए और साथ में गाएं चराते हुए श्रीकृष्ण बहुत सुंदर लगते हैं।

(7) मीरा श्रीकृष्ण जी से यमुना जी के किनारे क्यों मिलना चाहती हैं?

उ० मीरा जानती हैं कि कृष्ण को यमुना का किनारा बहुत प्रिय है। उन्होंने वहाँ गोपियों संग रास रचाया था। वह भी प्रेम में लीन होकर उसी स्थान पर मिलना चाहती हैं, ताकि उनका प्रेम प्राप्त कर सकें। आधी रात का समय इसलिए कहती हैं, ताकि कृष्ण अकेले हों। कृष्ण के प्रेम को पाने के लिए मीरा

के मन में अलौकिक व्याकुलता के भाव हैं।

सभी – 2, 3 अंक।

(8) पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है?

या

(9) 'हरि आप हरो....' पद में मीरा ने किन-किन पर की गई कृपा का स्मरण करते हुए हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती की है?

उ०- मीरा श्रीकृष्ण को संबोधित करते हुए कहती हैं कि हे श्रीकृष्ण! आप तो सदैव अपने भक्तों की पीड़ा को दूर करते हैं। अनेक उदाहरणों के माध्यम से श्रीकृष्ण को अपनी पीड़ा हरने की बात कहती हैं। जिस प्रकार भरी सभा में कौरवों द्वारा अपमानित होने पर जब द्रौपदी ने रक्षा के लिए पुकारा तो आपने वस्त्र बढ़ाकर उनके मान-सम्मान की रक्षा की। इसी प्रकार भक्त प्रह्लाद को बचाने हेतु नरसिंह का रूप धारण कर हिरण्यकश्यप को मारा था। मुसीबत में पड़े ऐरावत हाथी को मगरमच्छ के मुँह से बचाया। और इन सब दृष्टांतों के माध्यम से अपनी पीड़ा हरने के साथ-साथ सांसारिक बंधनों से मुक्ति के लिए भी प्रार्थना की है।

(10) दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं?

या

(11) अपने आराध्य श्रीकृष्ण का दर्शन पाने के लिए मीरा क्या-क्या उपाय करना चाहती हैं?

उ०-> मीरा श्रीकृष्ण को सर्वस्व समर्पित कर चुकी हैं इसलिए वे केवल कृष्ण के लिए

ही कार्य करना चाहती हैं। श्री कृष्ण की समीपता व दर्शन हेतु उनकी दासी बनना चाहती हैं। वे चाहती हैं दासी बनकर श्री कृष्ण के लिए बाग लगाएं, उन्हें वहां विहार करते हुए देखकर दर्शन सुख प्राप्त करें। वृंदावन की कुंज गलियों में उनकी लीलाओं का गुणगान करना चाहती हैं। इस प्रकार दासी के रूप में दर्शन, नामस्मरण, और भाव-भक्ति रूपी जागीर प्राप्त कर अपना जीवन सफल बनाना चाहती हैं।

---

(12) मीरा बाई ने श्रीकृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है?

उ.- मीरा बाई ने श्रीकृष्ण के रूप सौंदर्य का अलौकिक वर्णन किया है। श्रीकृष्ण के शरीर पर पीले वस्त्र सुशोभित हो रहे हैं। सिर पर मोर पंख युक्त मुकुट सुशोभित हो रहा है। गले में वैजयंती माला उनके सौंदर्य में चार चाँद लगा रहा है। वे बाँसुरी बजाते हुए वृंदावन में गौएँ चराते हुए घूमते हैं। इस प्रकार इस रूप में श्री कृष्ण का बहुत ही मनोरम रूप उभरता है।

---

(13) मीरा बाई की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

उ.- मीरा बाई ने अपने पदों में ब्रज, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती आदि भाषाओं का प्रयोग किया गया है। भाषा अत्यंत सहज और सुबोध है। शब्द चयन भावानुकूल है। भाषा में कोमलता, मधुरता और सरसता के गुण विद्यमान हैं।

अपनी प्रेम की पीड़ा को अभिव्यक्त करने के लिए उन्होंने अत्यंत भावानुकूल शब्दावली का प्रयोग किया है। भक्ति भाव के कारण शांत रस प्रमुख है तथा प्रसाद गुण की ~~क्ष~~ भावाभिव्यक्ति हुई है। मीरा बाई श्रीकृष्ण की अनन्य उपासिका हैं। वे अपने आराध्य देव से अपनी पीड़ा हरने की विनती कर रही हैं। इसमें श्रीकृष्ण के प्रति श्रद्धा, भक्ति

और विश्वास के भाव की अभिव्यंजना हुई है। मीराबाई की भाषा में अनेक अलंकारों जैसे- अनुप्रास, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, उदाहरण आदि अलंकारों का सफल प्रयोग हुआ है।

---

(14) वे श्री कृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या कार्य करने को तैयार हैं?

उ0 - मीरा ने श्रीकृष्ण को अपने प्रियतम के रूप में देखा है। वे बार-बार श्रीकृष्ण का दर्शन करना चाहती हैं। उन्हें पाने के लिए उनकी दासी बनना भी स्वीकार है। वे प्रतिदिन दर्शन पाने के लिए उनके महलों में बाग लगाने के लिए तैयार हैं। वे बड़े-बड़े महलों का निर्माण करवाकर उनके बीच में खिड़कियाँ बनवाना चाहती हैं ताकि वे श्रीकृष्ण के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त कर सकें। वे उनके दर्शन पाने के लिए कुसुंबी साड़ी पहनकर यमुना जी के तट पर आधी रात को प्रतीक्षा करने को तैयार हैं। मीरा के मन में अपने आराध्य से मिलने के लिए व्याकुलता है। इसलिए वे उन्हें पाने के लिए हर संभव प्रयास करने को तैयार हैं।

सखी । अंक-

(15) मीरा कृष्ण से क्या चाहती हैं?

उ0 - मीरा श्रीकृष्ण से कामना करती हैं कि वे उसकी सब पीड़ाएँ हर लें। यह संसार निराधार है, एक श्री कृष्ण ही उसके जीवन के आधार हैं। इसलिए कृष्ण आकर उसे दर्शन दें।

---

(16) 'तीनूं बातां सरसी' का आशय स्पष्ट करें।

उ0 - भक्ति के तीन रूप हैं - प्रभु दर्शन, नाम स्मरण और भाव-भक्ति। मीरा कहती हैं यदि उसे कृष्ण की दासी बनने का अवसर

मिला तो वह मे तीनों सुख प्राप्त कर सकेंगी।

(17) मीरा कुसुंभी साड़ी किसलिए पहनना चाहती हैं?
उ० - कुसुंभी अर्थात लाल साड़ी प्रेम की प्रतीक है, यह सुहाग की प्रतीक है। मीरा यह साड़ी पहन कर अपना प्रेम प्रकट करना चाहती हैं। वे उनकी भक्ति में लीन हो जाना चाहती हैं।

(18) मीरा का हृदय अधीर क्यों है?
उ० - मीरा का हृदय कृष्ण से मिलने के लिए अधीर है वह पूरे मनोयोग से कृष्ण से प्रेम करती है। अतः उस के मन में बहुत अधिक व्याकुलता है।

(19) मीरा ऊँचे-ऊँचे महलों के बीच-बीच में 'बारी' क्यों बनाना चाहती हैं?
उ० - जिससे कि वे उनसे श्री कृष्ण का दर्शन प्राप्त कर सकें।

(20) मीरा की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।
उ० - मीरा श्रीकृष्ण की अनन्य उपासिका हैं। वे श्रीकृष्ण को अपना प्रियतम, पति व संरक्षक मानती हैं और स्वयं को उनकी दासी बताती हैं। आराध्यरूप में वे श्री कृष्ण की चाकर बनने को तैयार हैं। वे प्रभु दर्शन, नामस्मरण, भाव-भक्ति पाने हेतु कुछ भी करने को तैयार हैं। उन्हें कृष्ण का मोहक रूप पसंद है - पीले वस्त्र, वैजयंती माला तथा मोर पंख से युक्त मुकुट वाला रूप। यह भक्ति तो श्रृंगार प्रधान है। मीरा की भक्ति का दूसरा रूप शांत रस प्रधान है। इसमें वे अपने प्रभु से अपनी अपनी पीड़ा दूर करने के लिए कहती हैं। कृष्ण का यह रूप रक्षक का रूप है। वे कृष्ण को ही अपना सर्वस्व मानती हैं।